2

कहानगुरु का मङ्गलायतन...

आदिप्रभु का, वीरप्रभु का, बाहुबलीजी का आयतन।
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहानगुरु का **मङ्गलायतन** ॥टेक॥

प्रथम विराजें आदिप्रभुजी, ऋषभदेव सादर वंदन।
ध्यानमात्र से भक्तजनों के, मिटेंगे सब भव दु:ख क्रंदन॥
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहानगुरु का **मङ्गलायतन** ॥1॥

वर्धमान महावीर जिनस्वामी के चरणों में मेरा वंदन।
चारों गति में भटका हूँ, अब कटेंगे दु:ख मेरे प्रतिक्षण॥
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहानगुरु का **मङ्गलायतन** ॥2॥

बाहुबलीजी की शरणा पाकर, धन-धन होंगे हम सब जन।
स्व-पर विवेक जगेगा उर में, मेटेंगे मिथ्यादर्शन॥
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहानगुरु का **मङ्गलायतन** ॥3॥

गगनचुम्बी मानस्तंभ प्यारा, विराजें आदिनाथ भगवन्।
दर्शनमात्र से भव्यजनों के, मान गले साधें आतम॥
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहानगुरु का **मङ्गलायतन** ॥4॥

कहानगुरु के **मङ्गलायतन** पर, तन-मन-धन सब है अर्पण।
भेदज्ञान की ज्योति जला करूँ निज आतम का अभिनंदन॥
मंगलमय रे, मंगलमय रे, कहानगुरु का **मङ्गलायतन** ॥5॥